क्या शिक्षक एक पेशेवर है ?

निमरत खंदपुर

आम तौर पर शिक्षक और शिक्षण के सन्दर्भ में पेशा, पेशेवर इत्यादि शब्दों का प्रयोग उचित नहीं माना जाता। इस लेख में पेशा और पेशेवर शब्दों पर कुछ विद्वानों के मतों को साझा करते हुए इन शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास किया गया है। लेख में यह चर्चा भी शामिल है कि पेशेवर तैयारी की आख़िर ज़रूरत क्यों है, पेशेवर तैयारी में क्या-क्या शामिल होता है और यह कैसे शिक्षक को अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने और उन्हें अंजाम देने में मददगार होती है। सं.

शिक्षक-शिक्षकों की कार्यशालाओं में अक्सर राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 पर चर्चा होती है। चर्चा के दौरान, प्रतिभागियों का ध्यान दस्तावेज़ के उपशीर्षक पर लाया जाता है। यह उपशीर्षक दस्तावेज़ के उद्देश्य को संक्षिप्त में प्रस्तुत करता है– 'पेशेवर और मानवीय शिक्षकों की तैयारी की ओर'।

मेरा अनुभव रहा है कि मानवीय शब्द को ले कर सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। परन्तु, पेशा (प्रोफेशन) शब्द पर प्रतिक्रियाएँ नकारात्मक ही नहीं, अक्सर आक्रामक भी होती हैं। कुछ प्रतिभागी यह चिन्ता रखते हैं कि शिक्षक तो गुरु होता है– एक गुरु पेशेवर (प्रोफेशनल) कैसे हो सकता है? यह चिन्ता भी रखी जाती है कि एक पेशेवर तो वेतन के लिए काम करता है - एक शिक्षक अगर केवल वेतन के लिए काम करेगा तो उसकी सोच और उसके कार्य का दायरा बहुत सीमित हो जाएगा।

कुछ प्रतिभागियों का यह कहना होता है कि जब से शिक्षक एक पेशेवर के रूप में देखा जाने लगा है, तब से उसकी समाज में प्रतिष्ठा कम हो गई है। तो प्रश्न यह उठता है कि यह शब्द इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि इसका स्थान पाठ्यचर्या की रूपरेखा के उपशीर्षक में चिह्नित किया गया है? इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले, ज़रूरी है कि इस शब्द को समझने का प्रयत्न किया जाए।

पेशेवर शब्द का तात्पर्य

पेशे को परिभाषित करते हुए एरिक होईल (1982) कुछ मानक प्रस्तुत करते हैं :

- पेशा एक ऐसा कार्य है जो महत्त्वपूर्ण सामाजिक लक्ष्य पूरे करता है। इस कार्य को करने के लिए खास दर्ज़े की निपुणता की आवश्यकता होती है।
- यह कार्य करते समय नई-नई परिस्थितियाँ निर्मित हो सकती हैं जिनका इन निपुणताओं की मदद से सामना करना पड़ सकता है।
- अत: अनुभव से प्राप्त ज्ञान या निश्चित गुर पर्याप्त नहीं होता, एक संगठित एवं व्यवस्थित ज्ञान की मदद से समाधान निकालने पड़ते है।
- इस ज्ञान और कौशलों को हासिल करने के लिए एक लम्बे अरसे की उच्च शिक्षा की ज़रूरत है।

> शिक्षकों के साथ एक कार्यशाला के दौरान लम्बी चर्चा छिड़ी। प्रश्न यह था कि शिक्षकों के सन्दर्भ में पेशेवर शब्द का उपयोग उचित है या नहीं। कुछ शिक्षकों को इस शब्द से आपत्ति नहीं थी। उनका कहना था कि निजी और पेशेवर ज़िन्दगी अलग-अलग होती है। इसलिए दोनों में भेद करने की आवश्यकता है। तथापि, यह भी विचार रखा गया कि पेशेवराना मूल्य व्यक्तिगत मूल्यों पर ही आधारित होते हैं। अतः दोनों में भेद करना आवश्यक नहीं है। इस पर शिक्षकों ने यह तर्क रखा कि वे केवल शिक्षक नहीं, साधारण इंसान भी हैं। अतः निजी और पेशेवराना जीवन में अन्तर करने की आवश्यकता है। आम इन्सान की तरह शिक्षक भी चौक में गोल-गप्पे खाना चाहते हैं, जीन्स पहनना चाहते हैं, शाम को दो पैग लगाना चाहते हैं। शिक्षकों ने सवाल उठाया– मेरे लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त क्या हैं? उदाहरण के लिए, बच्चे पूछते हैं कि आप के नाखून लम्बे हैं तो हमें नाखून काटने को क्यों कहते है? तो क्या शिक्षकों से जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षाएँ हैं, वह उनके निजी जीवन में भी लागू होती हैं? शिक्षकों का कहना था कि इन मुद्दों का समाधान आजकल के भौतिकवादी समाज में आवश्यक है।

- इस तैयारी के दौरान पेशेवराना मूल्यों में समाजीकरण भी शामिल है।
- 'ग्राहक' के प्रति प्रतिबद्धता इन मूल्यों में अहम है।
- क्योंकि व्यावसायिक ज्ञान हर स्थिति के लिए समान रूप से उपयोग में नहीं लाया जा सकता, इसलिए पेशेवर के लिए स्वायत्तता और निर्णय लेने की स्वतंत्रता अनिवार्य हैं।
- क्योंकि पेशे की ज़िम्मेदारियाँ इतनी विशिष्ट हैं, इसलिए इस पेशे से सम्बन्धित नीति निर्धारण में पेशे के सदस्यों की भागीदारी और निर्णय लेने का अधिकार और शासन से स्वायत्तता आवश्यक है।
- तैयारी की लम्बी अवधि, ज़िम्मेदारी और 'ग्राहक' के प्रति गहन प्रतिबद्धता का परिणाम उच्च प्रतिष्ठा और उपयुक्त वेतन हैं।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में व्यवसाय की विशेषताएँ कुछ ऐसे परिभाषित की गई हैं: 'अकादमिक प्रशिक्षण की पर्याप्त लम्बी अवधि, ज्ञान का एक व्यवस्थित, सुगठित भण्डार जिस पर यह कार्य आधारित है, पर्याप्त समय का औपचारिक और गहन व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं कार्य क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव, और व्यावसायिक नैतिकता के कोड जो सदस्यों को एक बिरादरी में बाँधते हों'। (अनूदित, पृष्ठ संख्या 15)

ह्यूज सोकट के विचार साझा करते हुए केम्पबेल (1996) कहती हैं कि व्यवसाय का मुद्दा मूलरूप से सदाचार और नैतिकता का मुद्दा है। स्वभाव तो बदलता नहीं है परन्तु पेशेवर विकास के माध्यम से उस पेशे के प्रति उत्तरदायित्व की समझ विकसित होती है। कौशल, निपुणता और नैतिक अभिकर्तृत्व (एजेंसी) व्यक्ति में ऐसी मानसिक स्थिति उत्पन्न करते हैं कि दूसरों की भलाई अनिवार्य होती है। अतः भेदभाव करने का सवाल ही नहीं उठता। एक नैतिक रूपरेखा

के अनुसार वे कार्य करते हैं– यह रूपरेखा पेशेवर तैयारी के दौरान विकसित होती है और हर पेशेवर व्यक्ति इस रूपरेखा के प्रति निष्ठा रखता है।

स्क़एर्स (2003) के अनुसार कुछ लोगों का कहना है कि शिक्षण एक पेशा हो ही नहीं सकता। शिक्षण अनेक अध्ययन के क्षेत्रों से लिए गए ज्ञान का मिश्रण है। वह खुद एक अध्ययन का क्षेत्र है ही नहीं। यही कारण है कि शिक्षकों की आवाज़ नीति या उच्च स्तर के निर्णयों में पाई ही नहीं जाती। परन्तु स्क़एर्स इस राय को शिक्षण के प्रति घटिया सोच समझते हैं। कुछ हद तक वह शिक्षकों को जिम्मेदार ठहराते हैं क्योंकि उन्होंने शिक्षण को केवल विधियों से परिभाषित कर दिया है। स्क़एर्स शिक्षण को नई सोच से देखने का प्रस्ताव रखते हैं– शिक्षण अन्य व्यवसायों की तरह किसी उद्देश्य प्राप्ति में सहायक है, शिक्षण संदर्भ आधारित है और शिक्षण प्रक्रियात्मक है।

शिक्षण, स्वांतः सुखाय नहीं किया जाता है बल्कि किसी और के सीखने में सहयोगी होता है और सीखने से जो बदलाव आता है, वह शिक्षण के दायरे से कहीं अधिक है। शिक्षण, स्थिति और शिक्षार्थी के सन्दर्भ से बदलता है; इसलिए शिक्षकों को लगातार आकस्मिक निर्णय लेना पड़ता है। वह तयशुदा तरीकों को अपना नहीं सकते। वह समय और सोच के सन्दर्भ में भी बदलता है। अतः, स्क़एर्स शिक्षण को एक पेशे के रुप में देखते हैं।

ऊपर की गई चर्चा में जो पहलू निकल कर आए हैं, उन पर एक शिक्षक के सन्दर्भ में शोध साहित्य और निजी अनुभव के आधार पर आगे चर्चा की गई है।

पेशेवर शब्द का तात्पर्य— शिक्षक के सन्दर्भ में

एक पेशेवर व्यक्ति की अपनी अलग पेशेवराना पहचान होती है– एक शिक्षक के कार्य की विशेषताओं पर चिन्तन करने पर कोई संदेह नहीं कि शिक्षक की अनोखी पहचान होती है। साथ ही, एक पेशे में प्रवेश औपचारिक होता है– यह कथन शिक्षक के लिए भी सही है। एक व्यक्ति शिक्षक तभी बन सकता है जब वह कम से कम दो साल शिक्षक शिक्षा के संस्थान में लगा कर, परीक्षा में सफल हो कर, मान्यता प्राप्त डिग्री हासिल करे। साथ ही कुछ कक्षाओं में पढ़ाने के लिए, शिक्षक को टीचिंग एलीजबिलिटी टेस्ट (टीइटी) में भी सफलता का प्रदर्शन देना पड़ता है।

शिक्षण के लिए व्यवस्थित ज्ञान की आवश्यकता है। एक शिक्षक के लिए सैद्धान्तिक ज्ञान, विषयवस्तु से सम्बन्धित ज्ञान और पेशेवर ज्ञान अनिवार्य है। विषयवस्तु के गहन ज्ञान होने पर ही एक शिक्षक विभिन्न स्तर के छात्रों को उपयुक्त प्रकार से यह ज्ञान प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही, विषयवस्तु का ज्ञान शिक्षक को आत्मविश्वास देता है। यह आत्मविश्वास एक ऐसे शिक्षक का विकास करता है जो छात्रों को स्वयं सीखने की आज़ादी दे सकता हो। उनके प्रश्नों के उत्तर दे सकता हो और इन प्रश्नों के आधार पर, पूर्वनिर्धारित योजना से अलग हट सकता है। यह तभी संभव है जब सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी शिक्षकों को असल कक्षाओं में कार्य करने के अवसर दिये जाएँ जिन पर उन्हें चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहन के साथ सकारात्मक फीडबैक दिया जाए। साथ ही, अनुभवी शिक्षकों और अपने सहपाठियों की कक्षाओं का अवलोकन कर उनके द्वारा किए जा रहे कार्य को समझने व उसका विश्लेषण करने के लिए चर्चा के अवसर उपलब्ध कराये जाएँ।

शिक्षणशास्त्र और शिक्षापद्धति एवं विषयवस्तु की मिली-जुली समझ भी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के लिए अनिवार्य है। शिक्षक को न केवल ज्ञान की समझ की ज़रूरत है परन्तु उसे इस ज्ञान का मन्थन अपने अनुभव के साथ करके, एक निजी रूपरेखा को तैयार करना है जो उसके निर्णय और काम को दिशा दे। यह

केवल एक सुनियोजित एवं लम्बी अवधि के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से मुमकिन है।

एक पेशेवर शिक्षक के लिए व्यवस्थित सुगठित ज्ञान भण्डार की आवश्यकता न केवल शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया है बल्कि अपनी स्वायत्तता बनाने के लिए भी ज़रुरी है। एक पेशेवर शिक्षक की विशेषताओं में स्वायत्तता और ज़वाबदेही भी शामिल हैं। परन्तु, स्वायत्तता और ज़वाबदेही, समझ और अनुभव का परिणाम हैं। अगर एक शिक्षक को अपने कार्यक्षेत्र के हर पहलू– चाहे वह शिक्षण-अधिगम और आकलन सम्बन्धित हो या दूसरी शैक्षिक प्रक्रियाओं से जुड़ा हो, या उसके स्वयं के विकास से जुड़ा हो– की गहरी समझ हो, तो वह निर्णय खुद ले सकता है। अगर शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों की समझ हो, तो अपने द्वारा लिए गए हर निर्णय के परिणाम के बारे में चिन्तन करके शिक्षक खुद ही ज़िम्मेदारी ले सकता है– उसे किसी की निगरानी की ज़रूरत नहीं होगी।

एक शिक्षक को शिक्षा और उसकी व्यवस्था के विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ भी होनी चाहिए। शिक्षा नीति और क्रियान्वयन की समझ होने पर शिक्षक अपने रोज़ के कार्यों में खास मतलब पा सकता है। जो कार्य उन्हें कठिन या अनुचित लगते हैं, उनके पीछे क्या सोच है यह समझना भी शिक्षक के लिए आवश्यक है। समाज और शिक्षा के अन्तर्सम्बन्ध, शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न भागों में अन्तर्सम्बन्ध एवं इन सब का शिक्षा के इतिहास के साथ जुड़ाव– यह सब समझना एक शिक्षक के लिए अनिवार्य है। तभी वह अपने रोज़ के छोटे-छोटे और उद्वेलित करने वाले किस्सों से उठकर अपना कार्य कर सकता है।

पेशे की विशेषताओं में साझी व्यावसायिक नैतिकता भी शामिल है; वे मूल्य और नियम जिन को आत्मसात कर शिक्षक अपना कार्य करते हैं। चाहे वह बच्चों से प्यार या समुदाय और उसकी भिन्नताओं के प्रति आदर हो, या अपने विकास के प्रति प्रतिबद्धता हो। व्यवसाइयों की एक बिरादरी सी बन जाती है जिसमें नैतिक व्यवहार के लिखित या अलिखित नियम से बन जाते हैं। इस बिरादरी का हर एक सदस्य प्रवीणता की ओर अग्रसर होता है।

आशा है कि पूर्वगामी चर्चा से यह स्पष्ट हो गया होगा कि शिक्षक के पेशेवर विकास की उपयुक्त प्रक्रियाओं से शिक्षक की पेशेवर क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। एक प्रश्न जो शिक्षकों के सन्दर्भ में अक्सर पूछा जाता है– क्या शिक्षक पैदा होते हैं या उन्हें बनाया जा सकता है? इसका उत्तर स्पष्ट है- उपयुक्त प्रक्रियाओं और प्रासंगिक अनुभवों के माध्यम से छात्र-अध्यापकों को एक ज़िम्मेदार व्यावसायी बनाया जा सकता है।

उपसंहार

पूर्वगामी चर्चा के आधार पर एक पेशेवर शिक्षक के जो गुण उभर कर आते हैं, वे शिक्षक के सशक्तिकरण से सीधा सम्बन्ध रखते हैं– सैद्धान्तिक ज्ञान, विषयवस्तु का ज्ञान और शिक्षणशास्त्र को लेकर कार्य करने के लिए एक व्यवस्थित रूपरेखा। व्यावसायिक ज्ञान में शिक्षक के उत्तरदायित्व, शिक्षा व्यवस्था की समझ, कार्य-क्षेत्र की समझ और शिक्षा और समुदाय के अन्तर्सम्बन्ध की समझ शामिल हैं। इन सब की प्राप्ति के लिए जहाँ एक ओर एक लम्बी अवधि की औपचारिक और गहन शिक्षा की ज़रुरत है वहीं अनुभव की अहमियत, चिन्तन, स्वायत्तता एवं ज़वाबदेही भी ज़रुरी है।

देखा जाए तो, शिक्षक को एक पेशेवर की तरह तैयार करना स्कूल में उनकी रोज की दिनचर्या के लिए अहम है। अपने कार्य करने की योग्यता और नई स्थितियों में शिक्षा की प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए, शिक्षक को एक पेशेवर व्यक्ति के समान गुणों का प्रदर्शन करना होगा। परन्तु शिक्षक एक पेशेवर नहीं बन पाया– एक लम्बे समय की शिक्षा की जगह, ज़्यादातर शिक्षक दो साल का 'प्रशिक्षण' पाते हैं। शिक्षक-शिक्षा नीति एक पेशेवर शिक्षक की बात

करती है परन्तु शिक्षक को नीति की नज़र से देखा नहीं जाता। शिक्षक की सेवा-शर्तों को देखा जाए या उनका समाज में स्थान देखा जाए– दोनों ही उसे पेशेवर के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। शिक्षक से अपेक्षा है कि वह समालोचक एवं विवेकशील व्यक्तियों का विकास करे, पर यह कार्य करने की न तो उनकी तैयारी है, न उनके पास ऐसी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें हैं जिन के सहयोग से इसे बेहतर तरीके से किया जा सकता है। जिस प्रकार का प्रशिक्षण उन्हें मिला है और जिस हद तक उन्हें अपने निर्णय करने की स्वायत्तता है, चाहते हुए भी शिक्षक खुद को कर्मकाण्डी प्रक्रियाओं से अलग नहीं कर पाते।

शायद यही कारण है कि जब भी शिक्षकों के साथ कार्यशालाओं में 'पेशेवर शिक्षक' की बात होती है, वह उसे वास्तविकता से बहुत अलग पाते हैं। कई दशकों से शिक्षकों ने अपने आप को इतना लाचार पाया है कि उनकी पेशेवर पहचान गुरु और राष्ट्र-निर्माता से हट कर केवल एक कर्मचारी की बन गई है। वे एक पेशेवर के विवरण को अपने से बहुत दूर पाते हैं। कोशिश रहती है कि अगर पेशा शब्द पर सहमति नहीं बने तो कम से कम उस पेशे के मानकों पर तो सहमति हो। यह मानक एक ऐसी शिक्षक शिक्षा का मार्गदर्शन करते हैं जिसमें हमारी कक्षाओं में बदलाव लाने की क्षमता है।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में शिक्षण के पेशे की तैयारी का विवरण कुछ ऐसे किया गया है– 'शिक्षण एक पेशा है और शिक्षक शिक्षा, शिक्षकों के पेशेवर विकास की प्रक्रिया है। एक व्यक्ति को व्यावसाय के लिए तैयार करना एक कठिन कार्य है जिसमें कई मोर्चों और दृष्टिकोण से कार्यवाही की आवश्यकता है।' (अनूदित पृष्ठ, 15) आशा है कि हमारी शिक्षक शिक्षा में बदलाव जल्द आएगा, और हमारे शिक्षक मानवीय और पेशेवर गुणों से सम्पन्न होंगे।

सन्दर्भ

कृष्ण कुमार (2008), *'निरीह तानाशाह : भारत का अध्यापक'*। दीवार का इस्तेमाल और अन्य लेख। एकलव्य, भोपाल।

Calderhead, J. (1991), 'Teaching as a Professional Activity', A Pollard & J Bourne (Eds) *Teaching and Learning in the Primary School.* London: Routledge : 80 – 83

Campbell, E. (1996), 'The Moral Core of Professionalism as a Teachable Ideal and a Matter of Character', Book Review. *The Moral Base for Teacher Professionalism* by Hugh Sockett. *Curriculum Inquiry*, Vol. 26, No.1 : 71-80

Darling-Hammond, L. (2005), 'Teaching as a Profession: Lessons in Teacher Preparation and Professional Development', *The Phi Delta Kappan*, Vol. 87, No. 3 : 237-240

Hoyle, E. (1982), 'The Professionalization of Teachers: A Paradox', *British Journal of Educational Studies*, Vol. 30, No. 2 : 161-171

Labaree, D.F. (2000), 'On the Nature of Teaching and Teacher Education. Difficult Practices that Look Easy', *Journal of Teacher Education*, Vol. 51, Issue 3 : 228-233

Squires, G. (2003), Chapter 2. The Paradigm Problem. *Teaching as a Professional Discipline*. Abingdon-on-Thames: Routledge.

निमरत खंदपुर पिछले तीन दशक से शिक्षक शिक्षा एवं अध्यापन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ कॉनटीनुइंग एजुकेशन ऐंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर में कार्यरत हैं।
सम्पर्कः nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org